मूलांक:	विषय:	पृष्ठांक:	मूलांक:	विषय:	पृष्ठांक:	मूलांक:	विषय:	पृष्ठांक:
००१	पद ०१- प्रज्ञापना		---	पद ०३- बहुवक्तव्यता (वर्तते)		३५३	पद ०७- उच्छवास:	
१९२	पद ०२- स्थानं		---	--द्वार् २०- संज्ञी		३५४	पद ०८- संज्ञा	
२५७	पद ०३- बहुवक्तव्यता		---	--द्वार् २१- भवसिद्धिक:		३५६	पद ०९- योनि:	
---	--द्वार् ०१- दिशा		---	--द्वार् २२- अस्तिकाय:		३६१	पद १०- चरिम:	
---	--द्वार् ०२- गतिः		---	--द्वार् २३- चरम:				
---	--द्वार् ०३- इन्द्रियं		---	--द्वार् २४- जीव:		३७५	पद ११- भाषा	
---	--द्वार् ०४- काय:		---	--द्वार् २५- क्षेत्रं		४००	पद १२- शरीरं	
---	--द्वार् ०५- योग:		---	--द्वार् २६- बन्धं		४०५	पद १३- परिणाम:	
---	--द्वार् ०६- वेद:		---	--द्वार् २७- पुद्गल, दिशा-		४१३	पद १४- कषाय:	
---	--द्वार् ०७- कषाय:			आदि अल्पबहुत्वं				
---	--द्वार् ०८- लेश्या					४१९	पद १५- इन्द्रियं	
---	--द्वार् ०९- द्रष्टि:		२९८	पद ०४- स्थितिः		---	--उद्देशक: ०१- नामादि	
---	--द्वार् १०- ज्ञानं		३०७	पद ०५- विशेषं		---	--उद्देशक: ०२- उपचयादि	
---	--द्वार् ११- अज्ञानं		३२६	पद ०६- व्युत्क्रान्ति:		४३८	पद १६- प्रयोग:	
---	--द्वार् १२- दर्शनं		---	--द्वार् ०१- द्वादश:				
---	--द्वार् १३- संयत:		---	--द्वार् ०२- चतुर्विंशति:		४४२	पद १७- लेश्या	
---	--द्वार् १४- उपयोग:		---	--द्वार् ०३- सांतरं		---	--उद्देशक: ०१- समाहारादि	
---	--द्वार् १५- आहारक:		---	--द्वार् ०४- एकसमयं		---	--उद्देशक: ०२- षड्भेदा:	
---	--द्वार् १६- भाषक:		---	--द्वार् ०५- आगति:		---	--उद्देशक: ०३- उपपातादि	
---	--द्वार् १७- परित्त:		---	--द्वार् ०६- उद्वर्तना/गति:		---	--उद्देशक: ०४- परिणामादि	
---	--द्वार् १८- पर्याप्त:		---	--द्वार् ०७- परभवायु:		---	--उद्देशक: ०५- वर्णादि	
---	--द्वार् १९- सूक्ष्मं		---	--द्वार् ०८- आकर्ष:/आयुबंध:		---	--उद्देशक: ०६- मनुष्यापेक्षया	

मूलाङ्का: ३४९ + २३१ प्रज्ञापना (उपांग) सूत्रस्य विषयानुक्रम - २ दीप-अनुक्रमा: ६२२

मूलांक:	विषय:	पृष्ठांक:	मूलांक:	विषय:	पृष्ठांक:	मूलांक:	विषय:	पृष्ठांक:
४७१	पद १८- कायस्थिति:		---	पद १८- बहुवक्तव्यता (वर्तते)		---	पद २८-आहार/उद्देशक:२-वर्तते	-----
---	--द्वार् ०१- जीव:		---	--द्वार् २१- अस्तिकाय:		---	--द्वार् ०२- भवसिद्धिकत्वं	१३०
---	--द्वार् ०२- गति:		----	--द्वार् २२- चरिम:		---	--द्वार् ०३- संज्ञी	१30
---	--द्वार् ०३- इन्द्रियं					---	--द्वार् ०४- लेश्या	१३८
---	--द्वार् ०४- काय:		४९५	पद १९- सम्यकत्वं		---	--द्वार् ०५- द्रष्टि:	१३८
---	--द्वार् ०५- योग:		४९६	पद २०- अंतक्रिया		---	--द्वार् ०६- संयत:	१३८
---	--द्वार् ०६- वेदं		५०९	पद २१- अवगाहनासंस्थान/शरीर		---	--द्वार् ०७- कषाय:	१३८
---	--द्वार् ०७- कषाय:		५२५	पद २२- क्रिया		---	--द्वार् ०८- ज्ञानं	१४६
---	--द्वार् ०८- लेश्या					---	--द्वार् ०९- योग:	१४६
---	--द्वार् ०९- सम्यकत्वं		५३४	पद २३- कर्मप्रकृत्ति:	०१२	---	--द्वार् १०- उपयोग:	१४६
---	--द्वार् १०- ज्ञानं		---	--उद्देशक: ०१- अष्टविधा	०१२	---	--द्वार् ११- वेद:	१४६
			----	--उद्देशक: ०२- भेद-प्रभेदा:	०३७	---	--द्वार् १२- शरीरं	१४६
---	--द्वार् ११- दर्शनं					---	--द्वार् १३- पर्याप्ति:	१४६
---	--द्वार् १२- संयत:		५४६	पद २४- कर्मबन्धं	०८९			
---	--द्वार् १३- उपयोग:		५४७	पद २५- कर्मवेदनं	०९४	५७२	पद २९- उपयोग:	१५६
---	--द्वार् १४- आहार:		५४८	पद २६- कर्मवेदबन्धं	०९६	५७३	पद ३०- पश्यता	१६३
---	--द्वार् १५- भाषक:		५४९	पद २७- कर्मवेदवेदनं	१०१	५७५	पद ३१- संज्ञी	१७२
---	--द्वार् १६- परित:					५७७	पद ३२- संयत:	१७५
---	--द्वार् १७- पर्याप्त:		५७०	पद २८- आहार:	१०३	५७९	पद ३३- अवधि:	१७९
---	--द्वार् १८- सूक्ष्मं		---	--उद्देशक: ०१- सचित्तादि	१०३	५८४	पद ३४- प्रविचारणा	१९२
---	--द्वार् १९- संज्ञी		---	--उद्देशक: ०२-	१२९	५९५	पद ३५- वेदना	२१३
---	--द्वार् २०- भवसिद्धिक:		---	--द्वार् ०१- आहारकत्वं	१४०	५९९-६२२	पद ३६- समुद्घात:	२२४

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[१५],उपांगसूत्र-[४] "प्रज्ञापना" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्ति: